# देव गुरु बृहस्पति देवी-देवताओं के भी गुरु हैं

**जितेन्द्र हाडा**

ज्योतिष शास्त्र अनुसार नवग्रहों में बृहस्पति को गुरु की उपाधि दी गई है। क्योंकि मनुष्य के जीवन पर इस ग्रह का महत्वपूर्ण स्थान तथा प्रभाव है। यह गुरु ग्रह सभी प्रकार की आपदाओं-विपदाओं, विनाशक स्थितियों से पृथ्वी के साथ-साथ मनुष्यों की रक्षा करने वाला ग्रह है।

सौरमण्डल में सूर्य के वृहद् आकार के बाद बृहस्पति ग्रह के आकार को माना गया है। पृथ्वी से दूर इस ग्रह का व्यास, करीब 150000 किलोमीटर तथा सूर्य से इसकी दूरी 777,000000 किलोमीटर तक होना उल्लेखित है। यह गुरु ग्रह के रूप में बृहस्पति महर्षि अंगीरा के पुत्र है, माता का नाम सुमित्रा, बहन का नाम योग सिद्धा है। ये जीव के कारक ग्रह है। ये सत्य के प्रतीक है, बुद्धि, ज्ञान, वाणी शक्ति के स्वामी है। साथ ही इन्हें देवी-देवताओं का गुरु होने का पद व सम्मान प्राप्त है। बृहस्पति के अलग इनके अन्य नाम है- देव-पुरोहित, देवमन्त्री, देवग्य, गुरु, अंगीरा जीव, वाचस्पति। इनके देवता ब्रह्मा है। गौत्र- अंगीरा, वाहन- एरावत (सफेद रंग का हाथी) स्वभाव मौन, शांत, क्षत्रिय पुरुष। भ्रमण काल एक राशि में 13 माह, विशेषता में इन्हें रहस्यमयी ज्ञानी कहा जाता है।

**नक्षत्र-** पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा, दिशा ईशान कोण, गुरु गृह बृहस्पति सूर्य की तरह अस्त तथा उदय होते हैं। इनके बीच 30 दिनों का अन्तर रहता है। इनका आकार इतना है कि 1300 पृथ्वीयां इसमें समा सकती हैं। इनकी शक्ति पृथ्वी से 318 गुणा अधिक है।

ये गुरु गृह मनुष्य पर तभी प्रसन्न होते हैं जब वह गुरु बनाये, उनकी सेवा-अर्चना करे। दादा-दादी, माता-पिता का आदर करे, पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाये, सत्य बोले, घर को धूप-दीप से सुवासित रखें। अधर्म, दुराचरण से कोसों दूर रहें।

कुण्डली में गुरु द्वितीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भाव के कारक ग्रह हैं। धनु एवं मीन राशि पर इनका आधिपत्य है। धनु राशि बृहस्पति की मूल त्रिकोण राशि है। इसके मित्र सूर्य, मंगल एवं चन्द्रमा हैं। पीला पुखराज एवं सुनहला इनका रत्न है। गुरु ग्रह कर्क राशि में उच्च के होते हैं तथा मकर राशि में नीच के हो जाते हैं।

*जयपुर*